بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 12

राह-ए-ईमान

दिसम्बर
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना 7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 1.12.2023).....8
8. हम और हमारी पहचान.....12
9. ध्यान देने की कुछ ज़रूरी बातें.....15
10. नमाज़ संबंधी कुछ ज़रूरी बातें.....16
9. अरबईन नम्बर-4.....21
10. हुज़ूर अनवर से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर.....26
11. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

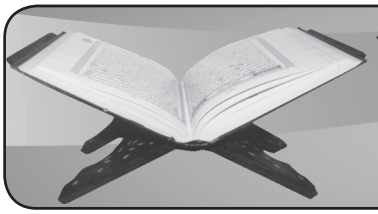

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

अनुवाद:- अल्लाह तुम्हारी शपथों में से व्यर्थ शपथों पर तुम्हें दण्ड नहीं देगा, अपितु तुम्हारे पक्की शपथ लेने (और उसे भंग कर देने) पर तुम्हें दण्ड देगा। सो उस (के भंग करने) का कफ़्फ़ारा (बदला) दस निर्धनों को दरमियाने दर्जे का खाना खिलाना है जो तुम अपने परिवार को खिलाते हो अथवा उन (दस) के वस्त्र देना या एक दास का स्वतन्त्र करना है। फिर जिसे (यह भी आसानी से) न मिले तो उसे तीन दिन के रोज़े रखना ज़रूरी है। जब तुम शपथें लो (और फिर उन्हें भंग करो) तो यह तुम्हारी शपथों का कफ़्फ़ारा (बदला) है और तुम अपनी शपथों की रक्षा किया करो। अल्लाह अपनी आयतों को तुम्हारे लिए इसी प्रकार वर्णन करता है ताकि तुम कृतज्ञ बन जाओ। (अल माईदा : 90)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह वर्णन करते हैं कि एक दिन रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझ से मिले। हुज़ूर अलैहि स्सलाम ने मुझे देख कर कहा, हे जाबिर आज मैं तुम्हें परेशान और उदास क्यों देख रहा हूँ। मैंने कहा हुज़ूर मेरे पिता शहीद हो गए हैं और काफी ऋण और बाल बच्चे छोड़ गए हैं। हुज़ूर फ़रमाने लगे क्या मैं तुम्हें यह ख़ुशख़बरी न सुनाऊं कि कैसे तुम्हारे पिता की अल्लाह तआला के हुज़ूर सराहना हुई। मैंने कहा हां हुज़ूर ज़रूर सुनाएं। उस पर अपने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने अगर किसी से बातचीत की है तो हमेशा पर्दे के पीछे से है लेकिन तुम्हारे पिता को पुन: जीवित किया और आमने सामने बातचीत की और कहा मेरे बन्दे मुझ से जो मांगना है मांग। मैं तुझे दूँगा तो तुम्हारे पिता ने जवाब में कहा कि हे मेरे रब्ब मैं चाहता हूँ कि तू जीवित कर के मुझे फिर दुनिया में भेज दे ताकि तेरे लिए फिर दोबारा कत्ल किया जाऊं। इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया: यह नहीं हो सकता क्योंकि यह कानून लागू कर चुका हूँ कि किसी को मरने के बाद फिर जीवित करके दुनिया में नहीं लौटाऊंगा। (तिर्मिज़ी अबवाबि तफ्सीर तफसीर सूरह आले इमरान)

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

मुसलमान की हक़ीक़त

अब दुनिया की हालत को देखो कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो अपने आचार व्यवहार से दिखाया कि मेरा मरना और जीना सब कुछ अल्लाह तआला के लिए है और या अब दुनिया में करोड़ों मुसलमान मौजूद हैं। किसी से कहा जाए कि क्या तू मुसलमान है? तो कहता है अल्हम्दुलिल्लाह। जिसका कलिमा पढ़ता है उसकी ज़िन्दगी का उसूल तो ख़ुदा के लिए था। मगर यह तो दुनिया के लिए जीता और दुनिया ही के लिए मरता है। जब तक कि जान गले तक न आ जाए। दुनिया ही उसकी चाहत और महबूब रहती है। फिर कैसे कह सकता है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण करता हूँ।

यह बड़ी ग़ौरतलब बात है। इसको सरसरी न समझो। मुसलमान बनना आसान नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण और त्याग का नमूना जब तक अपने अंदर पैदा न कर लो संतुष्ट न हो। अगर बिना अनुसरण के मुसलमान कहलाते हो तो यह केवल छिलका ही छिलका है। नाम और छिलके पर ख़ुश हो जाना बुद्धिमान का काम नहीं। लिखा है कि किसी यहूदी को एक मुसलमान ने कहा कि तू मुसलमान हो जा। उसने कहा कि तू केवल नाम ही पर ख़ुश न हो जा। मैंने अपने लड़के का नाम ख़ालिद रखा था और शाम से पहले ही उसको दफ़न कर आया। हक़ीक़त को ढूंढ़ो। केवल नाम पर राज़ी न हो जाओ। कितने शर्म की बात है कि इन्सान महानतम नबी का उम्मती कहला कर काफ़िरों (अधर्मियों) की सी ज़िन्दगी व्यतीत करे। तुम अपनी ज़िन्दगी में मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श दिखाओ। वही हालत पैदा करो और देखो कि अगर वह आदर्श नहीं है तो तुम शैतान के अनुयायी हो।

अत: यह बात अब अच्छी तरह समझ में आ सकती है कि अल्लाह तआला का महबूब होना इन्सान की ज़िन्दगी का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। क्योंकि जब तक अल्लाह तआला का महबूब न हो और ख़ुदा का प्यार न मिले कामयाबी की ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता और यह बात पैदा नहीं हो सकती जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा आज्ञापालन और अनुसरण न करो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने आचार व्यवहार से दिखा दिया है कि इस्लाम क्या है? इसलिए तुम वह इस्लाम अपने अंदर पैदा करो ताकि तुम ख़ुदा के महबूब बनो।

अब मैं फिर यह बताना चाहता हूँ कि 'हम्द' से ही मोहम्मद और अहमद बना है और ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दो नाम थे। मानो 'हम्द' के दो द्योतक हुए और फिर अल्हम्दुलिल्लाह के बाद अल्लाह तआला की चार विशेषताएं रब्बुल आलमीन, अर्रहमान, अर्रहीम और मालिक योमिद्दीन बयान की हैं।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब"

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

तीसरे प्रश्न का उत्तर...

दूसरे यह भी विचार करने का स्थान है कि क़ौम के लिए इस तरीके पर मरने से जैसा ईसाइयों ने प्रस्तावित किया है मसीह को क्या हासिल हुआ और क़ौम को इस से क्या लाभ? यदि वह जीवित रहता तो अपनी क़ौम में बड़े-बड़े सुधार करता, बड़े-बड़े दोष उनसे दूर करके दिखाता, परन्तु उसकी मृत्यु ने क्या करके दिखाया सिवाए इसके कि कुसमय मरने से सैंकड़ों फ़ित्ने पैदा हुए और ऐसी खराबियां प्रकटन में आईं जिनके कारण एक संसार तबाह हो गया। यह सच है कि जवां मर्द लोग क़ौम की भलाई के लिए अपने प्राण भी न्योछावर कर देते हैं या क़ौम के बचाव के लिए प्राणों को मौत के स्थान में डालते हैं परन्तु ऐसे व्यर्थ और निरर्थक तौर पर नहीं जो मसीह के बारे में वर्णन किया जाता है अपितु जो व्यक्ति बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से क़ौम के लिए प्राण देता है या प्राणों को मृत्यु के स्थान पर डालता है वह तो बुद्धिसंगत, प्रिय, काम आने वाले, स्पष्ट लाभप्रद तरीकों में से कोई ऐसा उच्चतम और स्पष्ट सर्वाधिक न्योछावर होने का लाभप्रद तरीका ग्रहण करता है जिस तरीके के इस्तेमाल से यद्यपि उसको कष्ट पहुँच जाए या प्राण ही जाएं परन्तु उसकी क़ौम कुछ विपत्तियों से सच-मुच बच जाए यह तो नहीं कि फांसी लगाकर या ज़हर खाकर या किसी कुएं में गिरने से आत्महत्या कर ले और फिर यह समझे कि मेरी आत्महत्या क़ौम के लिए भलाई का कारण होगी। ऐसी हरकत तो पाग़लों का काम है न कि बुद्धिमान धार्मिक लोगों का, अपितु यह मृत्यु अवैध मृत्यु है और निपट मूर्ख और सीधे-सादे लोगों के अतिरिक्त कोई इसका इरादा नहीं करता। मैं सच कहता हूँ कि कामिल और दृढ़प्रतिज्ञ आदमी का मरना उस विशेष हालत के अतिरिक्त बहुतों के बचाव के लिए उचित और प्रसिद्ध तरीके पर मरना ही पड़े क़ौम के लिए अच्छा नहीं अपितु बड़े संकट और शोक का स्थान है तथा ऐसा व्यक्ति जिसके अस्तित्व से ख़ुदा की प्रजा को भिन्न-भिन्न प्रकार का लाभ पहुँच रहा है यदि आत्महत्या का इरादा करे तो वह ख़ुदा तआला का बहुत पापी है और उसका गुनाह दूसरे ऐसे अपराधियों की अपेक्षा अधिक है। अत: प्रत्येक कामिल के लिए अनिवार्य है कि अपने लिए ख़ुदा तआला के दरबार से लम्बी आयु मांगे ताकि वह ख़ुदा की मख़्लूक़ के लिए उन समस्त कार्यों को भली-भाँति पूरा कर सके जिनके लिए उसके दिल में जोश डाला गया है। हाँ! दुष्ट आदमी का मरना, उसके लिए तथा ख़ुदा की मख़्लूक़ के लिए अच्छा है ताकि बुराइयों का भण्डार अधिक न होता जाए और ख़ुदा की मख़्लूक़ उसके प्रतिदिन फ़ित्ने से तबाह न हो जाए। यदि यह प्रश्न किया जाए कि समस्त पैग़म्बरों में से क़ौम के बचाव के लिए तथा ख़ुदाई प्रताप की अभिव्यक्ति के उद्देश्य से उचित तरीकों के साथ और आवश्यक हालातों के समय में किसी पैग़म्बर ने अधिकतर स्वयं को मौत के स्थान में डाला और क़ौम पर स्वयं को न्योछावर

करना चाहा। क्या मसीह या किसी और नबी या हमारे सय्यद-व-मौला मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने। तो इसका उत्तर जोश और रोशन तर्कों, स्पष्ट आयतों तथा ऐतिहासिक सबूत से मेरे सीने में भरा हुआ है मैं अफ़सोस के साथ उसका लिखना छोड़ देता हूँ कि वह बहुत लम्बा है यह थोड़ा सा निबंध उसको सहन नहीं कर सकता। इंशाअल्लाह यदि आयु ने वफ़ा की तो भविष्य में एक स्थायी पुस्तक इस बारे में लिखूंगा परन्तु यहाँ संक्षिप्त तौर पर खुशख़बरी देता हूँ कि वह पूर्ण व्यक्ति जो क़ौम पर और समस्त मानव जाति पर अपने नफ़्स को कुर्बान करने वाला है वह हमारे नबी करीम हैं अर्थात् سیّدنا ومولانا ووحیدنا وفریدنا احمد مجتبیٰ محمد مصطفیٰ الرسول النبی الأمّی العربی القرشی صلی اللہ علیہ وسلم۔ यहाँ मैंने सच्चे और झूठे धर्म के अन्तर के लिए वह अन्तर जो पृथ्वी पर मौजूद है अर्थात् जो बातें जिनका बुद्धि और अन्तर्आत्मा के द्वारा निर्णय हो सकता है कुछ लिख दिया है परन्तु जो अन्तर आकाश के द्वारा खुलता है वह भी ऐसा आवश्यक है कि उसके अतिरक्त सत्य और असत्य में अन्तर स्पष्ट नहीं हो सकता और वह यह है कि सच्चे धर्म के अनुयायियों के साथ ख़ुदा तआला का एक विशेष सम्बन्ध हो जाते हैं और वह पूर्ण अनुयायी अपने अनुकरणीय नबी का द्योतक और उसकी रूहानी परिस्थितियों तथा आन्तरिक बरकतों का एक नमूना हो जाता है। और जिस प्रकार बेटे के मध्यवर्ती अस्तित्व के कारण पोता भी बेटा ही कहलाता है इसी प्रकार जो व्यक्ति नबी के अनुकरण की छाया के नीचे पोषण प्राप्त है उसके साथ भी वही कृपा और उपकार होता है जो नबी के साथ होता है और जैसे नबी को निशान दिखाए जाते हैं ऐसा ही उसका विशेष तौर पर अध्यात्म ज्ञान बढ़ाने के लिए उसको भी निशान मिलते हैं। अत: ऐसे लोग उस धर्म की सच्चाई के लिए जिसके समर्थन के लिए वह प्रकट होते हैं जीवित निशान होते हैं। ख़ुदा तआला आकाश से उनकी सहायता करता है और प्रचुरता से उनकी दुआएं स्वीकार करता है और स्वीकृति की सूचना प्रदान करता है। उन पर संकट भी उतरते हैं परन्तु इसलिए नहीं उतरतीं कि उन्हें तबाह करें अपितु इसलिए कि अन्त में उनकी विशेष सहायता से क़ुदरत के निशान प्रकट किए जाएँ। वे अपमान के पश्चात् पुन: सम्मान पा लेते हैं और मरने के बाद फिर ज़िन्दा हो जाया करते हैं ताकि ख़ुदा तआला के विशेष कार्य उनमें प्रकट हों।

यहाँ यह नुक्त: स्मरण रखने योग्य है कि दुआ का स्वीकार होना दो प्रकार से होता है। एक बतौर इब्तिला (परीक्षा) और एक बतौर इस्तिफ़ा (प्रतिष्ठा)। बतौर इब्तिला तो कभी-कभी पापियों और अवज्ञाकारियों अपितु काफिरों की दुआ भी स्वीकार हो जाती है परन्तु ऐसा स्वीकार होना वास्तविक स्वीकारिता को सिद्ध नहीं करता अपितु नास्तिकों की ओर से चमत्कार दिखाना और परीक्षा के वर्ग से होता है परन्तु जो बतौर इस्तिफ़ा दुआ स्वीकार होती है उसमें यह शर्त है कि दुआ करने वाला ख़ुदा तआला के चुने हुए बन्दों में से हो और चारों ओर से चुने हुए प्रकाश और लक्षण उसमें प्रकट हों, क्योंकि ख़ुदा तआला वास्तविक स्वीकारिता के तौर पर अवज्ञाकारियों की दुआ कदापि नहीं सुनता अपितु उन्हीं की सुनता है जो उसकी दृष्टि में ईमानदार और उसके आदेश पर चलने वाले हों। (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ 69-73)

★ ★ ★

सम्पादकीय

हर उम्मत का हिसाब-किताब उसकी धर्म पुस्तक अनुसार होगा

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है :

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۛ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ (29 अलजासिया)

अनुवाद: और तू हर उम्मत को घुटनों के बल गिरा हुआ देखेगा। हर उम्मत अपनी किताब की तरफ़ बुलाई जाएगी। आज के दिन तुम उस की जज़ा दिए जाओगे जो तुम किया करते थे। ये हमारी किताब है जो तुम्हारे ख़िलाफ़ हक़ के साथ बातें करेगी। तुम जो कुछ करते थे हम यक़ीनन उसे तहरीर में ले आते थे।

- हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ी अल्लाह अन्हो ने तफ़सीर सग़ीर में इस आयत के नीचे फ़ुट नोट में तहरीर फ़रमाया है: - हर क़ौम का पहला फ़ैसला उस की शरीयत के मुताबिक़ होगा क्योंकि वो दूसरी शरीयत को तो झूटा समझती थी मगर क्या अपनी शरीयत पर इस का अमल था ? मौजूदा ज़माना में देखो तो इस असल को मद्दे नज़र रखकर न मुसलमान नजात पाते हैं, ना ईसाई, ना कोई और क़ौम। क्योंकि दूसरी शरीयतों को छोड़कर वो अपनी शरीयत पर भी अमल नहीं करते।

- और हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह अलराबा रहिमा अल्लाह ने सूरत अलजासिया के तआरुफ़ में तहरीर फ़रमाया है: - क़ियामत के हैबतनाक निशान देखकर और अपने बद-अंजाम को अपनी आँखों के सामने पाते हुए वो घुटनों के बल ज़मीन पर जा पड़ेंगे यानी अल्लाह ताला के जलाल के सामने सज्दा-रेज़ हो कर ये तमन्ना करेंगे कि काश वो इस अज़ाब-ए-अज़ीम से बचाए जा सकते। फिर फ़रमाया कि हर उम्मत का फ़ैसला उस की अपनी किताब यानी शरीयत के मुताबिक़ किया जाएगा।

इस सारे मुआमला में जो बात नोट करने वाली है वो ये है कि क़यामत के दिन जब हश्र अजसाद होगा उस का हिसाब किताब उस की शरीयत के मुताबिक़ होगा और पूछा जाएगा कि तुम्हारी शरीयत में ख़ुदाए वाहिद को हुवल्लाहु अहद (अल्लाह को एक) जानने की तालीम मौजूद है। क्या तुमने अपनी तमाम ज़िंदगी अपने अल्लाह को वाहिद ला शरीक समझा ? कहीं शिर्क तो नहीं कर बैठे ? तुम्हारे दीन में नमाज़ फ़र्ज़ क़रार दी गई थी क्या तुम पंज वक़्ता नमाज़ समय पर और तमाम शर्तों के साथ अदा करते रहे ? तुम्हारे दीन में तिलावत क़ुरआन का हुक्म है। क्या तुमने रोज़ाना तिलावत की ? तुम्हारे दीन में रोज़े और ज़कात फ़र्ज़ थे। क्या तुमने उस का हक़ अदा किया? तुम्हारे दीन में हज़रत मुहम्मद मस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत और आप की सीरत को अपने ऊपर लागू करने को कहा गया था। क्या तुमने इस में कोई सुस्ती तो नहीं दिखलाई?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"सो तुम होशियार रहो और ख़ुदा की तालीम और क़ुरआन की हिदायत के ख़िलाफ़ एक क़दम भी न उठाओ। मैं तुम्हें सच सच कहता हूँ कि जो शख़्स क़ुरआन के सात सौ हुक्मों में से एक छोटे से हुक्म को भी टालता है वह नजात का दरवाज़ा अपने हाथ से अपने पर बंद करता है।" (कश्ती नूह पृष्ठ- 34)

प्रिय पाठको! इस विषय पर अपना जाइज़ा लेने और फिर गंभीरता से विचार करने की ज़रूरत है। **संपादक**

मुनाजात और तब्लीग़-ए-हक़

इबतेदा[3] से तेरे ही साया में मेरे दिन कटे
गोद में तेरी रहा मैं मिस्ल तिफल शीरो ख़्वार[4]

नस्ले इन्सान में नहीं देखी वफ़ा[5] जो तुझ में है
तेरे बिना देखा नहीं कोई भी यारे ग़मगुसार[6]

लोग कहते हैं कि नालायक[7] नहीं होता क़बूल
मैंतो नालायक भी होकर पा गया दरगाह में बार

इस क़दर मुझ पर हुई तेरी अनायात ओ करम
जिन का मुश्किल है कि ता रोज़े क्यामत हो शुमार[8]

आसमान मेरे लिए तूने बनाया इक गवाह
चान्द और सूरज हुए मेरे लिए तारीक़ ओ तार[9]

तूने ताऊँ को भी भेजा मेरी नुसरत के लिए
ता वह पूरे हों निशान जो हैं सच्चाई का मदार[10]

हो गए बेकार सब हीले[11] जब आई वो बला
सारी तदबीरों का खाका उड़ गया मिस्ले ग़ुबार

सर ज़मीने हिन्द में ऐसी है शुहरत[12] मुझ को दी
जैसे होवे बरक[13] का इक दम में हरजा इनतशार[14]

फिर दो बारह है उतारा तूने आदम को यहाँ
ता वह नख़्ले रास्ती[15] इस मुल्क में लावे स्मार[16]

लोग सौ बक बक करें पर तेरे मक़्सद[17] और हैं
तेरी बातों के फ़रिश्ते भी नहीं हैं राज़दार[18]

हाथ में तेरे है हर शुस्रान[19] ओ नफा[20]-व-उसरो[21] युसर[22]

तू ही करता है किसी को बे नवा या बख्तयार[5]
जिस को चाहे तख़्ते शाही पर बिठा देता है तू

जिस को चाहे तख़्त से नीचे गिरा दे करके ख्वार।।

---

3. प्रारम्भ। 4.दूध पीता बच्चा। 5.प्रेम 6.दु:ख। 7.आयोग्य। 8.भलाई। 9.काले (सूर्य चन्द्र ग्रहण)। 10.आधार। 11. बहाने। 12. प्रसिद्धि। 13.बिजली। 14.फैलना। 15.वृक्ष। 16.फल। 17.उद्देश्य। 18.रहस्य जानने वाला, 19. धारा। 20. लाभ। 21. बातों। 22. दु:ख। 23. भाग्यशाली।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 1.12.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

युद्ध की अवस्था में हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सुन्दर आचरण। तथा फ़लिस्तीन के निर्दोष पीड़ितों के लिए दुआ की पुन: प्रेरणा।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा युद्धों के संदर्भ में कुछ बयान करूँगा। आप स. के व्यक्तित्व के आयाम तथा आप स. का नैतिक आचरण इन अवस्थाओं में किस तरह हमारे सामने आता है, बदर के युद्ध के संदर्भ में हम देख चुके हैं कि किस प्रकार आप स. ने बन्दियों को सुविधाएँ प्रदान कीं। बन्दी स्वयं कहते हैं कि आप स. के निर्देशानुसार सहाबी अपने खाने से अच्छा खाना हमें देते थे। फिर आप स. ने बड़ी आसान शर्तों पर उन क़ैदियों को रिहा कर दिया था। कुछ क़ैदियों का फ़िदिया (क़ैद से स्वतंत्र होने का बदला) केवल इतना था कि जिनको लिखना पढना आता था, वे मुसलमानों को लिखना पढना सिखा दें।

ये सब इस लिए था कि आप स. से किसी का निजि बैर नहीं था बल्कि अल्लाह तआला के दीन को मिटाने वालों के विरुद्ध लड़ाई थी। कुछ लोग दुशमन की ओर से लडने के लिए अपनी मजबूरियों के कारण शामिल होते थे तथा मुसलमानों से लडना नहीं चाहते थे। उनको आप स. ने अनेक सुविधाएँ उपलब्ध फ़रमाईं, कुछ उनमें से मुसलमान भी हो गए थे। आप स. ने युद्ध के नियम एवं सिद्धांत निश्चित फ़रमाए, सन्धियों एवं समझौतों का ध्यान भी रखा तथा इन बातों पर यथासम्भव सीमा तक अमल भी किया। आजकल की दुनिया की तरह नहीं कि नियम एवं सिद्धांत तो बहुतायत में बनाए हैं परन्तु अमल किसी पर नहीं, दोहरे स्तर हैं।

आप स. का जीवन क़ुर्आन करीम के आदेशों की अमली तफ़्सीर थी जहाँ न्याय, अमन तथा इंसाफ़ की स्थापना के लिए मूल सिद्धांत बयान किए गए हैं। अल्लाह तआला एक स्थान पर फ़रमाता

है कि-

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ۚ اِعْدِلُوْا ۗ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के लिए दृढ़ता पूर्वक निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में गवाह बन जाओ तथा किसी क़ौम की शत्रुता तुम्हें कदाचित इस बात के लिए तत्पर न करे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक्वा अर्थात ईशप्रायणता के सर्वाधिक निकट है तथा अल्लाह से डरो। नि:सन्देह अल्लाह उससे सदैव अवगत रहता है जो तुम करते हो। अत: आप स. का सुन्दर आचरण उस शिक्षा के प्रकाश में हर एक आयाम पर प्रभावी तथा उसके उच्चतम स्तर स्थापित करने वाला था। आज ओहद के हवाले से कुछ बयान करूँगा। जैसा कि घटना क्र म साबित करते हैं कि यह लड़ाई भी दुशमन ने अपनी शत्रुता की आग के कारण शुरु की थी तथा विवश होकर मुसलमानों को भी इस युद्ध के लिए निकलना पड़ा। यह युद्ध बदर की घटना के एक वर्ष बाद शव्वाल तीन हिजरी में शनिवार के दिन पेश आया।

इतिहासकारों तथा सीरत के लेखाकारों की इस बात पर सहमति है कि ओहद की लड़ाई शव्वाल तीन हिजरी में हुई थी। अपितु एक कथन चार हिजरी का भी है तथा अधिकतर सात तथा पन्द्रह शव्वाल का भी वर्णन किया जाता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने से जुम्अ: के दिन असर की नमाज़ के बाद रवाना हुए तथा शनिवार के दिन सूर्य निकलने से पहले ओहद के मैदान में पहुंचे।
सीरत खातमुन्नबिय्यीन स. नामक पुस्तक में ओहद के युद्ध का समय हज़रत मिजऱ्ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने १५ शव्वाल तीन हिजरी, ३१ मार्च ६२४ ईसवी दिन शनिवार बयान किया है।

इस युद्ध का कारण यह हुआ कि जब बदर की लड़ाई में क़ुरैश को भयानक हार हुई तो क़ुरैश के अग्रसर लोगों में से, जैसे अब्दुल्लाह बिन अबी रबीअ:, इकरिमा बिन अबू जहल, सफ़वान बिन उमय्या तथा दूसरे कुछ उत्सुक लोग अबू सुफ़यान के पास आए जिनका उस व्यापारिक दल में धन लगा हुआ था, जो बदर के युद्ध का कारण बना। यह धन मक्का में लाकर दारुन्नदवा में रख दिया गया था। उन्होंने अबू सुफ़यान को कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे लोगों का वध कर दिया है इस लिए इस व्यवसायिक धन के द्वारा उनके साथ युद्ध की तय्यारी करें, सम्भवत: हम अपने मृतकों का बदला ले सकें तथा कहा कि हम ख़ुशी से इस बात के लिए तय्यार हैं कि इस व्यवसाय के लाभ से एक सेना तय्यार की जाए। उसका सुझाव स्वीकार हुआ।

क़ुरैश ने माल में से २५ हज़ार का लाभ युद्ध के लिए अलग करके मूल धन उसके मालिकों को दे दिया। इस एक सामान्य कारण के अतिरिक्त कुछ अन्य बातें भी थीं जो कि इस युद्ध के कारण कहे जा सकते हैं। बदर की लड़ाई के बाद मक्का वालों का शाम देश जाना कठिन हो गया था क्यूँकि मक्के के व्यापार का रास्ता मदीने के ग्रामीण क्षेत्र से होकर जाता था तथा क़ुरैश को अपने पूर्व

अत्याचार तथा कष्टदायक गतिविधियों के कारण वहाँ से होकर जाना जटिल होता जा रहा था। युद्ध तथा सैन्य अभियानों में पराज्य, बदर के युद्ध में क़ुरैश के मुख्याओं की हत्या तथा सत्तर मुशरिकों की गिरफ़तारी जैसी बातें उनकी मर्यादा तथा सामाजिक स्थिति पर काले धब्बे थे। वे बदला लेना चाहते थे ताकि उनकी साख को संभाला जा सके। एक लेखक ने एक कारण यह बयान किया है कि क़ुरैश को कुछ अभियानों में असफलता हुई तथा इसके कारण उनमें दु:ख, पीड़ा एवं बदले की भावना अत्यधिक बढ़ गई थी। अतएव और भी अनेक कारण थे जिनके कारण क़ुरैश युद्ध की तय्यारी करते रहे। आस पास के क़बीलों को अपने साथ मिलाने के लिए किसी को लोभ तथा किसी को स्वाभिमान का बहाना बनाकर साथ मिला लिया।

हज़रत अब्बास रज़ी. की ओर से एक पत्र के द्वारा काफ़िरों की इन तय्यारियों की सूचना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हो गई। दूसरी ओर यहूदियों तथा मुनाफ़िक़ों ने झूठी ख़बर फैला दी कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई अच्छी ख़बर नहीं मिली। उन्होंने इस ख़बर को रंगीन बनाकर ख़ूब फैलाकर मुसलमानों को भयभीत करने का प्रयास किया जिसके कारण हर एक सावधान हो गया। शोर मचा हुआ था कि मक्का के मुशरिक युद्ध के लिए आ रहे हैं।
रमज़ान तीन हिजरी के अन्त अथवा शव्वाल के शुरु में मक्का के क़ुरैशियों की सेना निकली, जिनकी संख्या तीन हज़ार थी तथा जिनमें सात सौ सैनिक, दो सौ घोड़े तथा तीन हज़ार ऊँट थे। पन्द्रह महिलाएँ भी साथ थीं जिनमें अबू सुफ़यान, इकरिमा बिन अबू जहल, सफ़वान बिन उमय्या, ख़ालिद बिन वलीद तथा उमरू बिन अलआस की पतनियाँ भी शामिल थीं।

हज़रत अब्बास रज़ी. ने क़ुरैश की सेना से सम्बंधित सूचनाएँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उपलब्ध कराईं तथा अमरू बिन सालिम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का के मुशरिकों के निकले की सूचना पहुंचाई जिसका अबू सुफ़यान को पता चला तो उसके होश उड़ गए। सफ़वान बिन उमय्या बोला कि हमारी संख्या अधिक है, युद्ध सामग्री अधिक है, हम उनके जान व माल की हानि करने में सक्ष्म हैं, जबकि वे इसका सामथ्र्य नहीं रखते।

अबू सुफ़यान की पतनी हिन्दा ने कहा कि तुम लोग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की माता जी की क़बर खोद डालो तथा हर एक व्यक्ति के फ़िदए में उनकी माता का एक एक अंग दे देना। क़ुरैश ने इससे मतभेद किया कि इस तरह वे हमारे मृतकों की क़बरें खोदे देंगे। इस दल की महिलाएँ बदले की भावना को उत्तेजित कर रही थीं तथा यह दल आगे बढ़ता रहा। दूसरी ओर मुसलमान तय्यारी में थे। सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो सहाबियों को क़ुरैश की सेना के विषय में सूचना प्राप्त करने के लिए रवाना फ़रमाया तथा उस अवसर पर आप स. ने मुसलमानों की संख्या एवं शक्ति का आंकलन करने के लिए मदीना की पूरी मुस्लिम आबादी की जनगणना करवाई तो पता चला कि केवल पन्द्रह सौ मुसलमान लोग हैं।

उस समय की परिस्थितियों में इसको बड़ी संख्या समझा गया। कुछ सहाबियों ने ख़ुशी के जोश में यहाँ तक कह दिया कि क्या अब भी किसी का डर हो सकता है?

जब ओहद की लड़ाई के लिए गोष्ठि आयोजित हुई तो उसी समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रात मैंने एक सपना देखा है कि एक गाय जो काटी जा रही है तथा अपनी तलवार अर्थात ज़ुलफ़िक़ार नामक तलवार में दंदाना पड़ा देखा (अन्य रिवायतों में तलवार का दस्ता टूट जाने तथा दस्ते के पास दराड़ आने का वर्णन मिलता है) फिर मैंने देखा कि मैं एक मज़बूत कवच में हाथ डाल रहा हूँ। एक रिवायत में एक मज़बूत कवच पहने होने का वर्णन है, और मैं एक मेंढे पर सवार हूँ। आप स. ने इसका स्वप्नफल यह बयान फ़रमाया कि जहाँ तक गाय का सम्बंध है तो इससे यह संकेत है कि मेरे कुछ सहाबी शहीद होंगे, और जहाँ तक मेरी तलवार में दराड़ का विषय है तो इससे यह संकेत है कि मेरे घर वालों तथा वंश में से किसी व्यक्ति की हत्या होगी, तथा मज़बूत कवच का अर्थ मदीना है तथा मेंढे का मललब है कि मैं शत्रु के समर्थकों की हत्या करूँगा। अतएव आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात पर सुझाव मांगा तथा फ़रमाया कि यदि तुम्हारा मशवरा हो तो मदीने में रुको तथा महिलाओं एवं बच्चों को हम किलों में पहुंचा दें। मदीना एक किले की भांति था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो सुझाव दिया वही महामहिम मुहाजिरों तथा अन्सार का सुझाव था। परन्तु मुस्लिम युवाओं के एक दल ने जो बदर की लड़ाई में शामिल नहीं हुए थे अपनी शहादत से दीन की सेवा का सौभाग्य पाने के व्याकुल थे, अति अनुरोध किया कि आप हमें मदीने से बाहर लेकर चलें ताकि दुशमन हमें कायर न समझे।

आप स. ने युवाओं के सुझाव को मान लिया तथा निर्णय लिया कि हम खुले मैदान में निकल कर काफ़िरों का मुक़ाबला करेंगे और जुम्अ: की नमाज़ के बाद आप स. ने मुसलमानों में सामान्य प्रेरण दी कि अल्लाह ही राह में जिहाद के उद्देश्य से इस युद्ध में शमिल होकर सवाब प्राप्त करें। शेष विवरण इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

हुज़ूरे अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि फ़लिस्तीनियों के लिए दुआएँ करते रहें। युद्ध विराम के बाद फिर इन पर बिना किसी भेदभाव कि कौन सैनिक है और कौन नागरिक है बम्बारी होगी और फिर निर्दोष शहीद होंगे, कितना अत्याचार होगा अल्लाह बेहतर जानता है। उनके भविष्य के बारे में महान शक्तियों के इरादे जो हैं, वे बड़े भयानक हैं, इस लिए अत्यधिक दुआओं की आवश्यकता है उनके लिए, अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

हम और हमारी पहचान

सय्यद शमशाद अहमद नासिर, अमरीका

अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक एम ए

कुछ दिन हुए ख़ाकसार ने एक संपादकीय में पढ़ा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक शख़्स को यह नसीहत फ़रमाई कि

"हमारी पहचान की निशानी सिर्फ यह है कि जब नमाज़ का वक़्त आए तो वुज़ू कर के नमाज़ अदा कर लिया करो यह निशानी काफ़ी है।"

जब ख़ाकसार ने यह इरशाद पढ़ा तो तुरंत ज़हन आप अलैहिस्सलाम की एक और तहरीर और नसीहत की तरफ़ चला गया और वो नसीहत और इरशाद मजमूआ इश्तिहारात जिल्द सोम सफ़ा 48 पर यूं दर्ज है। आप जमात के अफ़राद को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं:-

"सो तुम होशयार हो जाओ और वाक़ई नेक दिल और ग़रीब मिज़ाज और रास्तबाज़ बन जाओ। तुम पंजवक्ता नमाज़ और अख़लाक़ी हालत से शनाख़्त किए जाओगे।"

एक शनाख़्त तो हमने ख़ुद करानी है जिसकी वजह से इस जमात का क़ियाम अमल में आया है। इस बारे में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद फ़रमाते हैं :

"यह सिलसिला बैअत तक़्वा शिआर लोगों की जमात के जमा करने के लिए है ताकि ऐसे मुत्तक़ियों का एक भारी गिरोह दुनिया पर अपना नेक असर डाले।

फ़रमाते हैं: **"ख़ुदा तआला ने इस गिरोह को अपना जलाल ज़ाहिर करने के लिए और अपनी क़ुदरत दिखाने के लिए पैदा करना और फिर तरक़्क़ी देना चाहा है। ता दुनिया में मुहब्बत और तौबा नसूह और पाकीज़गी और हक़ीक़ी नेकी और अमन और सलाहियत और बनीनौ की हमदर्दी को फैला दे। सो यह गिरोह उस का एक ख़ालिस गिरोह होगा और वो उन्हें आप अपनी रूह से क़ुव्वत देगा और उन्हें गंदी ज़ीस्त से साफ़ करेगा और उनकी ज़िंदगी में एक पाक तबदीली बख़्शेगा। "**

(मजमूआ इश्तिहारात जिल्द अव्वल सफ़ा 196 से 198)

यह वह शनाख़्त के पहलू हैं जो हज़रत मसीह मौऊद सारी जमात के अफ़राद से चाहते हैं। जिसमें नमाज़ और तक़्वा शामिल हैं। जो शख़्स बाक़ायदगी के साथ नमाज़ पढ़ता है इस की तो ख़ुदा तआला ने भी यूं तारीफ़ बयान फ़रमाई है।

اِنَّمَا يَعۡمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمۡ يَخۡشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰۤى اُولٰٓئِكَ اَنۡ يَّكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُهۡتَدِيۡنَ

(अत्तौबा 9:18)

यानी अल्लाह की मसाजिद तो वही आबाद करता है जो अल्लाह पर ईमान लाए और यौम आख़िरत पर और नमाज़ क़ायम करे। और ज़कात दे और अल्लाह के सिवा किसी से ख़ौफ़ न करे।

तिरमिज़ी अबवाबुत्तफ़्सीर में इसी आयत के तहत आँहज़रत स. का एक इरशाद यूं दर्ज है। हज़रत अबू सईद

बयान करते हैं कि रसूल अल्लाह स. ने फ़रमाया: जब तुम किसी शख़्स को मस्जिद में इबादत के लिए आते-जाते देखो तो तुम उस के मोमिन होने की गवाही दो। इस लिए कि अल्लाह तआला फ़रमाता है

"अल्लाह की मसाजिद को वही लोग आबाद करते हैं जो ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं। (हदीक़तुस्सालेहीन हदीस नंबर 259)

नमाज़ का क़ियाम, नमाज़ की बरवक़्त अदायगी और नमाज़ बाजमाअत पढ़ने की तो वो हमारी शनाख़्त है जिसे अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में और फिर हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद रसूल अल्लाह स. और ख़ुदा के पाक मसीह ने हमारे लिए मुक़र्रर कर दी है। इसलिए इस में न तो नाग़ा हो और न ही और सुस्ती। ताकि क़ियामत के दिन हमारा शुमार उन लोगों में हो जो नजात और फ़लाह पाने वाले होंगे।

ख़ाकसार ने शुरू ही में लिखा है कि जमात अहमदिया के क़ियाम की वजह यह है कि ख़ुदा तआला के हुक़ूक़, इबादत इलाही और इस की तौहीद पर इन्सान पूरी तरह जम जाए और इस की यह खासियत फिर उस की तब्लीग़ में भी मददगार साबित होंगी। क्योंकि उस के तक़्वा का असर दूसरों को खींच लाने का कारण बनेगा। इंशा अल्लाह

कहते हैं कि एक दफ़ा एक शख़्स हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ के पास आया और उसने सवाल किया कि : मैं दीन की तब्लीग़ के लिए जा रहा हूँ। कोई ऐसा अमल बता दें जो दीन की तब्लीग़ में बहुत मददगार साबित हो। इमाम जाफ़र ने जो जवाब दिया इस में पूरा दीन बयान कर दिया गया है। आपने फ़रमाया:

"कोशिश करना कि दीन की तब्लीग़ के लिए तुम्हें अपनी ज़बान इस्तिमाल न करनी पड़े।"

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमात के दोस्तों के लिए कुछ नसीहतें भी इरशाद फ़रमाई हैं। आपकी तसनीफ़ अज़ाला औहाम सफ़ा 546 पर उन दोस्तों के लिए जो सिलसिला बैअत में दाख़िल हैं नसीहत की बातें लिखी हैं। जो हम सब के लिए अपनी ज़िंदगियों में अमल करने के लिए बहुत ज़रूरी हैं। आप फ़रमाते हैं :

"ए मेरे दोस्तो जो मेरे सिलसिला बैअत में दाख़िल हो। ख़ुदा हमें और तुम्हें इन बातों की तौफ़ीक़ दे जिनसे वो राज़ी हो जाए। हम क्योंकर ख़ुदा तआला को राज़ी करें और क्योंकर वो हमारे साथ हो। इस का उसने मुझे बार-बार यही जवाब दिया कि तक़्वा से। सो ए मेरे प्यारे भाईओ कोशिश करो ता मुत्तक़ी बन जाओ। बग़ैर अमल के सब बातें हीच हैं और बग़ैर इख़लास के कोई अमल मक़बूल नहीं। सो तक़्वा यही है कि इन तमाम नुक़्सानों से बच कर ख़ुदा तआला की तरफ़ क़दम उठाओ और परहेज़गारी की बारीक राहों की रियाइत रखो। सबसे अव्वल अपने दिलों में इन्किसार और सफ़ाई और इख़लास पैदा करो और सच-मुच दिलों के हलीम और सलीम और ग़रीब बन जाओ कि हर एक ख़ैर और शर का बीज पहले दिल में ही पैदा होता है यद्यपि तेरा दिल शर से ख़ाली है तो तेरी ज़बान भी शर से ख़ाली होगी और ऐसा ही तेरी आँख और तेरे सारे अंग। हर एक नूर या अंधेरा पहले दिल में ही पैदा होता है और फिर रफ़्ता-रफ़्ता समस्त शरीर में फैल जाता है। सो अपने दिलों को हर-दम टटोलते रहो और जैसे पान खाने वाला अपने पाँव को फेरता रहता है और रद्दी टुकड़े को काटता

है और बाहर फेंकता है। इसी तरह तुम भी अपने दिलों के मख़फ़ी ख़्यालात और मख़फ़ी आदात और मख़फ़ी जज़बात और मख़फ़ी मुलकात को अपनी नज़र के सामने फेरते रहो और जिस ख़्याल या आदत या मलिका को रद्दी पाओ उस को काट कर बाहर फेंको ऐसा न हो कि वो तुम्हारे सारे दिल को नापाक कर दे और फिर तुम काटे जाओ।

फिर इसके बाद कोशिश करो और नीज़ ख़ुदा तआला से क़ुव्वत और हिम्मत माँगो कि तुम्हारे दलों के पाक इरादे और पाक ख़्यालात और पाक जज़बात और पाक ख़्वाहिशें तुम्हारे अंगों और तुम्हारी समस्त शक्तियों के माध्यम से प्रकट हों और पूर्ण हों ता तुम्हारी नेकियां कमाल तक पहुंचें क्योंकि जो बात दिल से निकले और दिल तक ही सिममित रहे वो तुम्हें किसी श्रेणी तक नहीं पहुंचा सकती। ख़ुदा तआला की महानता अपने दिलों में बिठाओ और इस के प्रताप को अपनी आँखों के सामने रखो।

यदि निजात चाहते हो तो दीन अलाजायज़ इख़तियार करो और मिस्कीनी से क़ुरआन-ए-क्रीम का जा अपनी गर्दनों पर उठाओ कि शरीर हलाक होगा और सरकश जहन्नुम में गिराया जाएगा। पर जो ग़रीबी से गर्दन झुकाता है वह मौत से बच जाएगा। दुनिया की ख़ुशहाली की शर्तों से ख़ुदा तआला की इबादत मत करो कि ऐसे ख़्याल के लिए गढ़ा दरपेश है। बल्कि तुम इस लिए उस की प्रसतिश करो कि प्रसतिश एक हक़ ख़ालिक़ का तुम पर है। चाहिए प्रसतिश ही तुम्हारी ज़िंदगी हो जाए और तुम्हारी नेकियों का केवल यही उद्देश्य हो कि वह महबूब हक़ीक़ी और मुहसिन-ए-हक़ीक़ी राज़ी हो जाए क्योंकि जो इस से कमतर ख़्याल है वो ठोकर की है।

ख़ुदा बड़ी दौलत है इस के पाने के लिए मुसीबतों के लिए तैयार हो जाओ। वह बड़ी मुराद है। इस को हासिल करने के लिए जानों को फ़िदा करो। अज़ीज़ो! ख़ुदा तआला के हुक्मों को बेक़दरी से न देखो। मौजूदा फ़लसफ़ा का ज़हर तुम पर-असर न करे। एक बच्चे की तरह बन कर उस के हुक्मों के नीचे चलो। नमाज़ पढ़ो नमाज़ पढ़ो कि वह तमाम सआदतों की कुंजी है और जब तू नमाज़ के लिए खड़ा होतो ऐसा न कर कि गोया तू एक रस्म अदा कर रहा है। बल्कि नमाज़ से पहले जैसे ज़ाहिरी वुज़ू करते हो ऐसा ही एक बातिनी वुज़ू भी करो। और अपने अंगों को ग़ैरुल्लाह के ख़्याल से धो डालो। तब इन दोनों वुज़ूओं के साथ खड़े हो जाओ और नमाज़ में बहुत दुआ करो और रोना और गिड़गिड़ाना अपनी आदत कर लो ताकि तुम पर रहम किया जाए।
इस नसीहत के आख़िर पर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद फ़रमाते हैं:-

"चाहिए कि इस्लाम की सारी तस्वीर तुम्हारे अस्तित्व में प्रकट हो और तुम्हारी पेशानियों में असर सुजूद नज़र आए और ख़ुदा तआला की बुज़ुर्गी तुम में क़ायम हो तौहीद पर क़ायम रहो और नमाज़ के पाबंद हो जाओ और अपने मौला हक़ीक़ी के हुक्मों को सबसे मुक़द्दम रखो और इस्लाम के लिए सारे दुख उठाओ। وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ۔ (अनुवाद- तुम केवल इस हाल में मारना कि तुम मुसलमान हो)

(इज़ाला औहाम जिल्द सोम सफ़ा 546-552 ऐडीशन 1984)

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल, 5 नवंबर 2019)

☆ ☆ ☆

ध्यान देने की कुछ ज़रूरी बातें

शुक्रवार का महत्व

मैं यह भी दुआ करता हूं कि खुदा तआला जुमा के लिए मस्जिद में आने की इस सुखद प्रवृत्ति को हमेशा के लिए जारी रखें और प्रत्येक अहमदी को भी इसके लिए दुआ करनी चाहिए। यह इस युग में प्रत्येक अहमदी की एक बड़ी ज़िम्मेदारी है क्योंकि यह उन आयतों से साबित होता है जो मैंने पढ़ी हैं। ये सूरह जुमा के आखिरी रुकू की आयतें हैं और इन्हें इस तरह शुरू किया गया है:

1) हे ईमान लाने वालो! जब तुम्हें जुमे के लिए बुलाया जाए तो तुम्हारी एकमात्र मंशा और चाहत जुमे की होनी चाहिए और बाकी सभी काम अब गौण (दूसरे नंबर पर) हो गए।

(खुतबा जुमा 18 सितंबर 2009)

बच्चों का प्रशिक्षण (तरबियत)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद फ़रमाते हैं:-

"फिर एक और बात है कि बच्चों की चाहत तो लोग पालते हैं और उनके बच्चे हो भी जाते हैं, लेकिन ऐसा कभी नहीं देखा गया कि वे अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने और उन्हें अच्छा, नेक और ईश्वर का आज्ञाकारी बनाने की चिंता करते हों। वे कभी उनके लिए प्रार्थना नहीं करते और कभी उनके प्रशिक्षण पर ध्यान नहीं देते।

(प्रशिक्षण के अलग-अलग स्तर हैं, इसे कैसे किया जाए, किस उम्र में किस तरह का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। किस उम्र में बच्चों को संभाला जाना चाहिए। इस ओर कोई ध्यान नहीं है।)

फ़रमाया: "मेरी अपनी स्थिति यह है कि ऐसी कोई नमाज़ नहीं है जिसमें मैं अपने दोस्तों, बच्चों और पत्नी के लिए प्रार्थना नहीं करता।" कई माता-पिता ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों को बुरी आदतें सिखाते हैं। शुरुआत में जब वे बुराई करना सीखने लगते हैं तो उन्हें चेतावनी नहीं दी जाती, नतीजा यह होता है कि वे दिन-ब-दिन और अधिक साहसी होते जाते हैं।

"लोग बच्चों की चाहत रखते हैं, लेकिन इसलिए नहीं कि वे धर्म के सेवक बनें बल्कि इसलिए कि दुनिया में उनका एक वारिस हो। और जब बच्चे पैदा होते हैं, तो उन्हें उनकी शिक्षा की चिंता नहीं होती है।" न ही उसकी मान्यताओं में सुधार होता है।

(मलफ़ूज़ात जिल्द -1 पृष्ठ 562)

☆ ☆ ☆

नमाज़ संबंधी कुछ ज़रूरी बातें

अज़ान

नमाज़ पढ़ने के लिए लोगों को मस्जिद में इकट्ठा करने के लिए अज़ान दी जाती है। जब अज़ान हो जाए तो सभी काम धन्धे बन्द करके नमाज़ के लिए मस्जिद में इकट्ठा हो जाना चाहिए। अज़ान देने का ढंग यह है कि एक आदमी वुज़ू करके क़िबला की ओर मुँह करके खड़ा हो जाता है और कानों में उंगलियाँ डाल कर ऊंची आवाज़ से ठहर-ठहर कर अज़ान के ये शब्द पढ़ता है :-

اَللّٰہُ اَکْبَرُ

अल्लाहु अक्बर (चार बार)

अल्लाह सब से बड़ा है।

أَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه

अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह (दो बार)

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं।

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه

अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह (दो बार)

मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ

हय्या अलस्-सलाह (दायें ओर मुँह कर के **दो बार)**

नमाज़ के लिए आओ।

حَیَّ عَلَی الْفَلَاح

हय्या अलल-फ़लाह (बाईं ओर मुँह करके **दो बार)**

कामयाबी की ओर आओ।

اَللّٰہُ اَکْبَرُ

अल्लाहु अक्बर (दो बार)

अल्लाह सब से बड़ा है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه

ला इलाहा इल्लल्लाह (एक बार)

अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं।

नोट : फ़ज्र की नमाज़ की अज़ान में 'हय्या अलल् फ़लाह' के बाद दो बार निम्नलिखित शब्द भी पढ़े जाते हैं :

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

अस्सलातु ख़ैरुम मिनन् नौम

नमाज़ नींद से बेहतर है।

अज़ान के बाद की दुआ

अज़ान के बाद यह दुआ पढ़ी जाती है :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ

अल्ला हुम्मा रब्बा

हे हमारे पालनहार अल्लाह !

هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ

हाज़िहिद् दावतित् ताम्मति

इस कामिल दुआ

وَ الصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ

वस् सलातिल क़ायमति

और क़ायम रहने वाली नमाज़ (के बाद)

اٰتِ مُحَمَّدَا نِ الْوَسِيْلَةَ

आति मुहम्मदा निल् वसीलता

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वसीला बना दे

وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ

वल फ़ज़ीलता वद् दरजतर रफ़ीअता

और उनकी प्रतिष्ठा और महानता को बढ़ा

اِلَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ

वब्अस्हु मक़ाममम् महमूदा निल् लज़ी वअद्तहू

और उन को प्रशंसा के उस स्थान पर खड़ा कर

जिसका तूने उनसे वादा किया है

إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝

इन्नका ला तुख़्लेफ़ुल मीआद

नि:सन्देह तू अपने वादा के ख़िलाफ़ नहीं करता।

वुज़ू

प्रत्येक नमाज़ पढ़ने से पहले वुज़ू करना बहुत ज़रूरी है। वुज़ू करने की विधि इस प्रकार है। सब से पहले

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अर्थात् (अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बिन मांगे देने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।)

पढ़ कर दोनों हाथ अच्छी प्रकार धोये जाएं। फिर तीन बार कुल्ली करके मुँह की सफ़ाई की जाए, फिर तीन बार नाक में पानी डाल कर नाक अच्छी तरह साफ की जाए। इसके बाद दोनों हाथों से चेहरे पर पानी डाल कर तीन बार अच्छी तरह धोया जाए। इसके बाद पहले दाहिना हाथ, फिर बायां हाथ कुहनियों तक तीन बार धोया जाए। इसके बाद दोनों हाथ पानी से तर करके सर पर माथे से लेकर पीछे गर्दन तक फेरे जाएँ इसे **मसह** कहते हैं। इसके बाद शहादत की उंगलियों (तर्जनी) को कानों में और अंगूठों को कानों के बाहर पिछले हिस्से पर फिराया जाए। अन्त में दोनों पैर, पहले दायाँ फिर बायाँ टख्नों तक धोये जाएं।

तयम्मुम

यदि किसी स्थान पर पानी न मिले, या कोई व्यक्ति बीमार हो तो ऐसी स्थिति में वुज़ू की बजाय तयम्मुम किया जा सकता है। इस की विधि यह है कि साफ़ और स्वच्छ मिट्टी या दीवार पर दोनों हाथ मार कर चेहरे पर और दोनों हाथों पर कुहनियों तक एक दूसरे हाथ से मल लिए जाएँ।

वुज़ू के बाद की दुआ

वुज़ू करने के बाद यह दुआ पढ़ी जाती है:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ

अल्ला हुम्मजअल्नी मिनत् तव्वाबीना

हे अल्लाह ! मुझे तौबा करने वाला बना

وَ اجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

वज्अल्नी मिनल मुततह् हिरीन

और मुझे पवित्र लोगों में से बना।

वुज़ू किन बातों से टूट जाता है

1.मल मूत्र करने और दुर्गन्ध निकलने से

2.रक्त, पस, या वीर्य निकलने से

3.लेट कर या किसी चीज़ से टेक लगाकर सोने से

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ

मस्जिद में दाख़िल होते समय पहले दाहिना पैर अन्दर रखना चाहिए और यह दुआ पढ़नी चाहिए।

بِسْمِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाह

अल्लाह का नाम लेकर (दाखिल होता हूँ)

الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ

अस्सलातु वस्सलामो अला रसूलिल्लाहि

अल्लाह की सलामती हो उसके रसूल पर।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ ذُنُوْبِىْ وَفْتَحْ لِىْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अल्ला हुम्मगफिरली ज़ुनूबी वफ़्तहली अब्वाबा रहमतिका

हे मेरे अल्लाह ! मेरे गुनाह बख्श दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

नोट : मस्जिद से निकलते समय पहले बायाँ पैर बाहर रखना चाहिए और यही दुआ पढ़नी चाहिए। और अन्तिम शब्द 'रहमतिका' की जगह 'फ़ज़्लिका' (अर्थात् तेरा फ़ज़्ल हो) पढ़ना चाहिए।

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

अरबईन नम्बर-4

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमात, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की कलम से

अनुवादक : फरहत अहमद आचार्य

जल्दबाज़ आलोचकों के लिए संक्षिप्त लेख और बराहीन अहमदिया की चर्चा

चूंकि यह भी अल्लाह की सुन्नत (नियम) है कि प्रत्येक व्यक्ति जो ख़ुदा की ओर से आता है बहुत से अदूरदर्शी, ख़ुदा से न डरने वाले उस की व्यक्तिगत बातों में हस्तक्षेप करके भिन्न-भिन्न प्रकार की आलोचनाएं किया करते हैं। कभी उसे झूठा ठहराते हैं, कभी उसे प्रतिज्ञा भंग करने वाला ठहराते हैं और कभी उसे लोगों के अधिकारों को नष्ट करने वाला और दूसरों का माल खाने वाला, बेईमान, और ग़बन करने वाला कहते हैं, कभी उसका नाम विषय लोलुप रखते हैं और कभी उसे भोग-विलास प्रिय तथा अच्छे खाने और अच्छे पहनने का रसिया की संज्ञा देते हैं और कभी मूर्ख कह कर पुकारते हैं★ और

★ खेद कि ज्ञान संबंधी निशान के मुक़ाबले में मूर्ख लोगों ने पीर महर अली शाह गोलड़वी के बारे में अकारण झूठी विजय का नगाड़ा बजा दिया और मुझे गन्दी गालियां दीं और मुझे उसके मुक़ाबले पर मूर्ख और अनाड़ी ठहराया जैसे मैं उस के रोब के नीचे आकर डर गया अन्यथा वह हज़रत तो सच्चे हृदय से मुक़ाबले पर अरबी तफ़्सीर लिखने के लिए तैयार हो गए थे और इसी नीयत से लाहौर पधारे थे परन्तु मैं आप की तेजस्वी शान और ज्ञान संबंधी प्रतिष्ठा को देख कर भाग गया। हे आकाश झूठों पर ला'नत कर। आमीन। प्रिय दर्शकगण! झूठे को अपमानित करने के लिए इसी समय जो 7 दिसम्बर 1900 ई. दिन जुमा है ख़ुदा ने मेरे हृदय में एक बात डाली है और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूँ जिस का नरक झूठों के लिए भड़क रहा है कि मैंने सख़्त झुठलाने को देखकर स्वयं इस अद्भुत मुक़ाबले के लिए निवेदन किया था और यदि पीर मेहर शाह साहिब मनक़ूली मुबाहसा और उसके साथ बैअत की शर्त प्रस्तुत न करते जिस से मेरा उद्देश्य पूर्णतया समाप्त हो गया था तो यदि लाहौर और क़ादियान में बर्फ़ के पर्वत भी होते और जाड़े के दिन होते तो मैं तब भी लाहौर पहुचता और उन्हें दिखाता कि आसमानी निशान इसे कहते हैं परन्तु उन्होंने मनक़ूली मुबाहसा और फिर बैअत की शर्त लगाकर अपनी जान बचाई और इस गन्दी चाल को प्रस्तुत करके अपने सम्मान की परवाह न की, परन्तु यदि पीर साहिब वास्तव में सुबोध अरबी तफ़्सीर पर समर्थ हैं और उन्होंने कोई छल नहीं किया तो अब भी वही शक्ति उनमें अवश्य मौजूद होगी। अत: मैं उनको ख़ुदा तआला की क़सम देता हूँ कि उसी मेरे निवेदन को इस रंग में पूरा कर दें कि मेरे दावों के झुठलाने के बारे में सरस-सुबोध अरबी में सूरह फ़ातिहा की एक तफ़्सीर लिखें जो चार भाग से कम न हो और मैं उसी सूरह की तफ़्सीर ख़ुदा की कृपा और उसकी शक्ति से अपने दावे को सिद्ध करने के सम्बन्ध में सरस-सुबोध अरबी में लिखूंगा। उन्हें अनुमति है कि वह इस तफ़्सीर में समस्त संसार के उलेमा से सहायता ले लें, अरब के पारंगत और अभयस्त विद्वानों को बुला लें, लाहौर और अन्य स्थानों के अरबी जानने वाले प्रोफ़ेसरों को भी सहायता के लिए बुला दें। 15 दिसम्बर 1900 ई. से सत्तर दिन तक इस कार्य के लिए हम दोनों को अवकाश

कभी उसे इन गुणों से प्रसिद्ध करते हैं कि वह एक आत्मपूजक, अहंकारी, और दुष्ट है, लोगों को गालियां देने वाला अपने विरोधियों को अपशब्द कहने वाला, कृपण, धन-पिशाच, बहुत झूठा, धोखेबाज़ बेईमान हत्यारा है। ये सब उपाधियां उन लोगों की ओर से ख़ुदा के नबियों और मामूरों को मिलती हैं जो दुराचारी और हृदय के अंधे होते हैं। अत: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में भी यही आपत्तियां अधिकांश दुष्ट स्वभआव रखने वाले लोगों की हैं कि उसने अपनी जाति के लोगों को प्रेरणा दी ताकि वे मिस्त्रियों के सोने-चांदी के बर्तन और आभूषण और बहुमूल्य कपड़े अस्थाई तौर पर मांगे और मात्र झूठ बोलते हुए कहें कि हम इबादत (उपासना) के लिए जाते हैं। कुछ दिन तक तुम्हारी ये वस्तुएं वापस लाकर दे देंगे और हृदय में कपट था। अन्तत: प्रतिज्ञा भंग की और झूठ बोला और दूसरों का माल अपने अधिकार में ले कर किनआन की ओर भाग गए। वास्तव में ये समस्त आरोप ऐसे हैं कि यदि बौद्धिक तौर पर इनका उत्तर दिया जाए तो बहुत से मूर्ख और निकृष्ट स्वभाव वाले इन उत्तरों से सन्तोष नहीं पा सकते। इसलिए ख़ुदा तआला का नियम ऐसे आलोचना करने वालों के उत्तर में यही है कि जो लोग उसकी ओर से आते हैं बड़े अद्भुत तौर पर उनका समर्थन करता है और निरन्तर आकाशीय निशान दिखाता है यहाँ तक कि मनीषी लोगों को अपनी ग़लती को स्वीकार करना पड़ता है और वे समझ लेते हैं कि यदि यह व्यक्ति झूठा और दोषी होता तो उसका इतना समर्थन क्यों होता, क्योंकि संभव नहीं कि ख़ुदा एक झूठ बांधने वाले से ऐसा प्रेम करे जैसा कि वह अपने सच्चे मित्रों से करता रहा है। इसी की ओर अल्लाह तआला इस आयत में संकेत फ़रमाता है-

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۔ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ

अर्थात् हम ने एक महान विजय जो हमारी ओर से एक बहुत बड़ा निशान है तुझे प्रदान की है तथापि वे समस्त पाप जो तेरी ओर सम्बद्ध किए जाते हैं उन पर इस स्पष्ट विजय की प्रकाशमय चादर डाल कर आलोचकों का दोषी होना सिद्ध करूँ। अत: अनादिकाल से और जब से अंबिया का सिलसिला आरम्भ हुआ

है, एक दिन भी अधिक न होगा। यदि मुक़ाबले पर तफ़्सीर लिखने के पश्चात् अरब के तीन सुविख्यात साहित्यकार उनकी तफ़्सीर को सरस और सुबोध शैली के साधनों से सम्पन्न ठहरा दें तथा अध्यात्मज्ञानों से भरपूर समझें तो मैं पांच सौ रुपया नक़द उनको दूंगा और अपनी समस्त पुस्तकें जल दूंगा और उनके हाथ पर बैअत कर लूंगा और यदि मामला इसके विपरीत निकला या उस अवधि तक अर्थात् सत्तर दिन तक वह कुछ भी लिख न सके तो मुझे ऐसे लोगों से बैअत की भी आवश्यकता नहीं और न रुपयों की इच्छा। केवल यही दिखाऊंगा कि कैसे उन्होंने पीर कहलाकर लज्जाजनक झूठ बोला और कैसे सरासर अन्याय, नीचता और बेईमानी से कुछ अख़बार वालों ने अपने अख़बारों में उन की सहायता की। मैं इस कार्य को ख़ुदा ने चाहा तुहफ़ा गोलड़विया को पूर्ण करने के बाद आरम्भ कर दूंगा। और जो वयक्ति हम में से सच्चा है वह कदापि लज्जित नहीं होगा। अब समय हैकि अख़बारों वाले जिन्होंने बिना देखे उनका समर्थन किया था उन्हें इस कार्य के लिए उठाएं। यह बात सत्तर दिन में सम्मिलित है कि दोनों सदस्यों की पुस्तकें प्रकाशित होकर आ जाएं। इसी से।

है अल्लाह का नियम यही है कि वह हज़ारों आलोचनाओं का एक ही उत्तर दे देता है अर्थात् समर्थन वाले निशानों द्वारा सानिध्य प्राप्त होना सिद्ध कर देता है। तब जैसे प्रकाश के निकलने और सूर्य के उदय होने से अचानक अंधकार दूर हो जाता है। इसी प्रकार समस्त आरोप टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। अत: मैं देखता हूँ कि मेरी ओर से भी ख़ुदा यही उत्तर दे रहा। यदि मैं वास्तव में झूठा, दुराचारी, बेईमान और असत्यवादी था तो फिर मेरे मुक़ाबले से इन लोगों की जान क्यों निकलती है। बात आसान थी[2]★ किसी आकाशीय निशान

★मैं इस स्थान तक पहुंचा था कि मुन्शी इलाही बख़्श एकाउन्टेन्ट की पुस्तक असा-ए-मूसा मुझे प्राप्त हुई जिसमें मेरी व्यक्तिगत बातों के बारे में मात्र दुर्भावना से तथा ख़ुदा की कुछ अच्छी और पवित्र भविष्यवाणियों पर सरासर जल्दबाज़ी से प्रहार किए गए हैं। वह पुस्तक जब मैंने हाथ से छोड़ी तो थोड़ी देर के बाद मुंशी इलाही बख़्श साहिब के बारे में इल्हाम हुआ يريدون ان يرواطمئك والله يريد ان يريك انعامه۔ الا نعامه۔ الانعامات المتواترة انت منى بمنزلة اولادى۔ الله وليك وربّك۔ فقلنا ياناركونى بردا۔ ان الله مع الذين اتقوا والذين هم يحسنون الحسنٰى۔

अनुवाद- ये लोग अपवित्रता तथा दुष्टता की खोज में हैं और ख़ुदा चाहता है कि अपनी निरन्तर ने'मतें जो तुझ पर हैं दिखो और स्त्री के मासिक धर्म के रक्त से तुझे क्योंकर समानता हो और वह तुझ में कहाँ शेष हैं। पवित्र परिवर्तनों ने उस रक्त को सुन्दर लड़का बना दिया और वह लड़का जो उस रक्त से बना मेरे हाथ से पैदा हुआ। इसलिए तू मुझ से औलाद के स्थान पर है अर्थात् यद्यपि बच्चों का मांस और हड्डियां मासिक धर्म के रक्त से ही पैदा हुआ है परन्तु वह रक्त स्त्री के मासिक धर्म के रक्त की तरह अपवित्र नहीं कहला सकते। इसी प्रकार तू भी मनुष्य की स्वाभाविक अपवित्रता से जो मानव के लिए अनिवार्य है और स्त्री के मासिक धर्म के रक्त से समान है उन्नति कर गया। अब उस पवित्र लड़के में हैज़ के ख़ून की खोज करना मूर्खता है वह तो ख़ुदा के हाथ से पवित्र लड़का बन गया और उसके लिए औलाद के स्थान पर हो गया। ख़ुदा तेरा अभिभावक और तेरा पालने वाला है। इसलिए विशेष तौर पर समानता मध्य है। जिस अग्नि को इस पुस्तक असा-ए-मूसा से भड़काना चाहा है हमने उसे बुझा दिया है। ख़ुदा संयमियों के साथ हैं जो शुभ कार्यों को पूर्ण सुन्दरता के साथ अंजाम देते हैं और संयम के सूक्ष्म पहलुओं का ध्यान रखते हैं अर्थात् वे लोग जो पूरी जांच-पड़ताल के बिना आयत وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ का चरितार्थ बनाते हैं। ख़ुदा उनके साथ नहीं है तथा उनके लिए ویل अर्थात् नर्क का वादा है। खेद कि मुन्शी साहिब ने इन व्यर्थ आलोचनाओं से पूर्व इस आयत पर विचार नहीं किया, परन्तु अच्छा हुआ कि उन्होंने उनके इक़रार के अनुसार इस पिशुनता का ख़ुदा तआला से तुरन्त उत्तर भी पा लिया अर्थात् अनेकों बार उनको यह इल्हाम जो पुस्तक असा-ए-मूसा में लिखित है अर्थात्انّى مهين لمن اراد اهانتك۔ अर्थात् मैं तुझे इस व्यक्ति की सहायता में अपमानित करूँगा जिनके बारे में तेरा विचार है कि वह मुझे अपमानित करना चाहता है अर्थात् यह विनीत। अब देखो यह कितना चमकता हुआ निशान है जिसने आयत وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ कि अविलम्ब पुष्टि कर दी। संसार के समस्त मौलवियों के पूछ लो कि इस इल्हाम के यही अर्थ हैं और مهين शब्द مهينك का स्थापन है और यह एक बड़ा निशान है। यदि मुंशी इलाही बख़्स

के द्वारा मेरा और अपना फ़ैसला ख़ुदा पर छोड़ देते और फिर ख़ुदा की कृपा को एक हकम के कार्य के तौर पर स्वीकार कर लेते, परन्तु इन लोगों को तो इस प्रकार के मुक़ाबले का नाम सुनने से भी मौत आती है। महर अली शाह गोलड़वी को सच्चा मानना और यह समझ लेना कि वह विजयी होकर लाहौर से चला गया है। क्या यह इस बात का ठोस प्रमाण नहीं है कि इन लोगों के हृदय विकृत हो गए हैं। न ख़ुदा का भय है और न हिसाब के दिन का कुछ डर है। इन लोगों के हृदय साहस, चपलता और धृष्टता से मर गए हैं जैसे मरना नहीं है। यदि ईमान और लज्जा से काम लेते तो इस कार्यवाही से नफ़रत करते जो महर अली शाह गोलड़वी से मेरे मुक़ाबले पर की। क्या मैंने उसे इसलिए बुलाया था कि मैं उस से एक मन्क़ूली बहस करके बैअत कर लूँ। जिस अवस्था में मैं बार-बार कहता हूँ कि ख़ुदा ने मुझे मसीह मौऊद नियुक्त करके भेजा है और मुझे बता दिया है कि अमुक हदीस सच्ची है और अमुक झूठी है और क़ुर्आन के सही अर्थों से मुझे परिचित कराया है तो फिर मैं किस बात में और किस उद्देश्य के लिए इन लोगों से मन्क़ूली बहस करूँ जबकि मुझे अपनी वह्यी पर ऐसा ही ईमान है जैसा कि तौरात, इन्जील और क़ुर्आन करीम पर तो क्या उन्हें मुझ से आशा हो सकती है कि उन के भ्रमों अपितु उनकी बनाई हुई बातों का भण्डार को सुनकर अपने विश्वास को छोड़ दूँ जिसकी नींव पूर्ण विश्वास पर है और वे लोग अपनी हठ को त्याग नहीं

साहिब ख़ुदा से डरें। अपमान के लिए मुंशी साहिब को दो ही मार्ग सूझे हैं (1) एक यह कि जितनी पुस्तकों का वादा किया था वे सब प्रकाशित नहीं कीं। यह न सोचा कि यदि कुछ विलम्ब हो गया तो क़ुर्आन करीम भी तो तेईस वर्ष में समाप्त हुआ। आपको बदनीयती पर क्योंकर ज्ञान हो गया मनुष्य ख़ुदा के प्रारब्ध के अधीन है तथा وانّما الاعمال بالنيّات जबकि यह भी बार-बार विज्ञापन दिया गया जिस जल्दबाज़ ने कुछ दिया है वह वापस ले ले तो फिर आरोप की क्या गुंजायश थी सिवाए मनोवृत्ति की दुष्टता के। (2) दूसरा आरोप यह है कि भविष्यवाणियां पूरी नहीं हुईं। इसका उत्तर तो यही है कि झूठों पर ख़ुदा की ला'नत। सौ से अधिक भविष्यवाणियां पूरी हो चुकीं। हज़ारों लोग गवाह हैं तथा आथम की भविष्यवाणी सशर्त थी, अपनी शर्त के अनुसार पूर्ण हुई। भला कहिए कि क्या वह इल्हाम सशर्त नहीं था। सच है इन्कार करना ला'नतियों का कार्य है यदि अपनी बुद्धि द्वारा परिणाम निकालने से हमारा यह भी विचार हो कि आथम निर्धारित समय के अन्दर मरेगा तो यह आरोप केवल इस अवस्था में हो सकता है कि पहले आप इस्लाम से विमुख हो जाएं क्योंकि आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की विवृत्ति भी हदीस ذهب وهلی की दृष्टि से ग़लत निकली। इसलिए इस ग़लती के कारण आप स. भी आप के नियम की दृष्टि से झूठे ठहरे। प्रथम इस प्रश्न का उत्तर दो फिर मुझ पर आपत्ति करो। इसी प्रकार अहमद बेग़ के दामाद के संबंध में भी सशर्त भविष्यवाणी है। यदि कुछ ईमान शेष है तो शर्त की क्यों प्रतीक्षा नहीं करते और यह ईमानदारी थी कि सारी पुस्तक में लेखराम के बारे में भविष्यवाणी की चर्चा तक नहीं की। क्या वह भविष्यवाणी पूरी हुई अथवा नहीं ? क्या अहमद बेग़ भविष्यवाणी के अनुसार निर्धारित समय सीमा के अन्दर मर गया अथवा नहीं ? अभी कल की बात है कि आप के आदरणीय मित्र डिप्टी फ़तह अली शाह साहिब ने मेरे पूछने पर बड़े विश्वास के साथ गवाही दी थी कि लेखराम के बारे में अत्यन्त सफ़ाई से भविष्यवाणी पूरी हो गई। अब इसी जमाअत में से होकर आप झुठलाने लगे। इसी से।

सकते, क्योंकि मेरे मुक़ाबले पर झूठी किताबें प्रकाशित कर चुके हैं और अब उनका लौटना मौत से अधिक कठिन है। ऐसी अवस्था में बहस से कौन सा लाभ हो सकता है। जिस अवस्था में मैंने विज्ञापन दे दिया कि भविष्य में किसी मौलवी इत्यादि से मन्क़ूली बहस नहीं करूँगा। अत: न्याय और नेक नीयत की मांग यह थी कि इन मन्क़ूली बहसों का मेरे सामने नाम भी न लेते। क्या मैं अपने वचन को भंग कर सकता था ? फिर यदि महर अली शाह का हृदय ख़राब नहीं था तो उसने ऐसी बहस की मुझ से क्यों विनती की जिसे मैं दृढ़ संकल्प के साथ त्याग चुका था। इस विनती में लोगों को यह धोखा दिया कि जैसे वह मेरे निमंत्रण को स्वीकार करता है। देखो यह कैसे विचित्र कपट से काम लिया तथा अपने विज्ञापन में यह लिखा कि प्रथम मन्क़ूली बहस करो और यदि शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी तथा उसके दो मित्र क़सम खाकर कह दें कि सही आस्थाएं वही हैं जो महर अली शाह प्रस्तुत करता हैतो अविलम्ब उसी सभा में मेरी बैअत कर लो। अब देखो संसार में इस से अधिक भी कोई कपट होता है। मैंने तो उनको निशान देखने और निशान दिखाने के लिए बुलाया और यह कहा कि बतौर चमत्कार दोनों सदस्य क़ुर्आन करीम की किसी सूरह की अरबी में तफ़्सीर लिखें तथा जिसकी तफ़्सीर और अरबी इबारत सरसता और सुबोधता की दृष्टि से निशान की सीमा तक पहुंची हुई सिद्ध हो वही ख़ुदा की ओर से समर्थित समझा जाए और स्पष्ट लिख दिया कि कोई मन्क़ूली बहसें नहीं होंगी। केवल निशान देखने और दिखाने के लिए यह मुक़ाबला होगा, परन्तु पीर साहिब ने मेरे इस पूर्ण निमन्त्रण को समाप्त करके पुन: मन्क़ूली बहस की विनती कर दी और उसी को फ़ैसले का आधार ठहरा दिया और लिख दिया कि हमने आप का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया, केवल एक शर्त अधिक लगा दी। हे धोखेबाज़ ! ख़ुदा तुझ से हिसाब ले। तूने मेरी शर्त का क्या स्वीकार किया जबकि तेरी ओर से मन्क़ूली बहस पर बैअत का आधार हो गया जिसे मैं प्रकाशित संकल्प के कारण किसी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकता था तो मेरा निमन्त्रण क्या स्वीकार किया गया? शेष...

★ ★ ★

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक और तिफ़्ल ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि क्या अल्लाह तआला पहले से जानता है कि हम जन्नत में जाऐंगे या दोज़ख़ में, और अगर वह जानता है तो फिर हमारी ज़िंदगी का मक़सद क्या है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : देखो एक अल्लाह तआला का इलम है और एक हमारा अमल है। अल्लाह तआला जानता है कि अमुक शख़्स दोज़ख़ में जाएगा लेकिन अल्लाह तआला हर शख़्स को रस्ता बताता है कि तुम यह नेक काम करोगे तो जन्नत में जाओगे। यह बुरे काम हैं, यह करोगे तो दोज़ख़ में जाओगे। इसलिए अल्लाह तआला से अंजाम बख़ैर होने की दुआ मांगनी चाहिए कि जब हमारा मरने का वक़्त आए तो उस वक़्त हम अल्लाह की बातों पर ईमान लाने वाले हूँ ताकि हम जन्नत में जाएं। या हमारी ऐसी कोशिश हो। क़ुरआन शरीफ़ ने भी हमें यह दुआ सिखाई है कि हम उस वक़्त मरें जब अल्लाह तआला हमारे से राज़ी हो। तो मक़सद यही है कि हम उस वक़्त जन्नत में जाएं और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले हूँ। बाक़ी अल्लाह तआला की रहमानियत है वह किसी को बख़श भी देती है। एक शख़्स के बारे में रिवायत में आता है कि वह बहुत गुनाहगार था, उसने बेशुमार क़तल किए हुए थे, निनानवे क़तल किए हुए थे। उसको ख़्याल आया कि मैं बड़ा बुरा आदमी हूँ, मैं अपनी इस्लाह कर लूं ताकि अल्लाह तआला मुझ से राज़ी हो जाए और मैं जन्नत में चला जाऊं। वह एक मौलवी के पास गया। उसने उस से पूछा कि मैंने इतने क़तल किए हैं, बहुत गुनाहगार हूँ। क्या मैं जन्नत में जा सकता हूँ? उसने कह दिया कि नहीं तुम जन्नत में नहीं जा सकते। तुम दोज़ख़ में जाओगे ही जाओगे। उस पर उसने उस को भी क़तल कर दिया कि जहां निनानवे क़तल किए हैं एक और क़तल करो ताकि सौ पूरे हो जाएं। सो क़तल करने के बाद फिर उसने किसी और से पूछा कि भई कोई ऐसा रस्ता है जहां में अल्लाह को राज़ी कर सकूं? उस शख़्स ने कहा हाँ फ़ुलां शहर में एक शख़्स बैठा है वह तुम्हें सही रस्ता बता सकता है, उसके पास जाओ। जब वह वहां जा रहा था तो वह रास्ते में मर गया, उसको मौत आगई। जब वह फ़ौत हो गया तो अल्लाह तआला ने इस शहर को जिससे वह क़तल करके निकला था इस से दूर कर दिया और जिस तरफ़ वह जा रहा था उसको इसके क़रीब कर दिया। अल्लाह तआला ने एक तमसीली ज़बान प्रयोग की। और फिर फ़रिश्तों को कहा कि जाओ और बताओ उसके सम्बन्ध में क्या फ़ैसला है। दोनों फ़रिश्ते आए एक दोज़ख़ में ले जाने वाला और एक जन्नत में ले जाने वाला। अब दोनों ले जाने वालों में झगड़ा हो गया। जो दोज़ख़ में ले जाने वाला फ़रिश्ता था वह कहता था कि उसने सौ क़तल किए हैं मैंने अल्लाह तआला से कह कर उस को दोज़ख़ में डलवा देना है। जो जन्नत में ले जाने वाला था वह

कहता था कि नहीं मुझे अल्लाह तआला ने भेजा है कि जा कर उस का रास्ता नापो। उसने कहा अच्छा। फिर फ़ैसला यह हुआ कि हम फ़ासिला नापते हैं अगर तो यह इस शहर के क़रीब हुआ जहां यह अपने गुनाह बख्शवाने के लिए जा रहा था तो यह जन्नत में चला जाएगा और अगर यह इस शहर के क़रीब हुआ जहां से यह क़तल कर के निकल रहा था तो दोज़ख़ में जाएगा। फिर जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला ने वह फ़ासिला कम कर दिया और जब फ़ासिला नापा गया तो उस शहर के वह ज़्यादा क़रीब हो गया जहां वह गुनाह बख्शवाने के लिए जा रहा था। और सिर्फ एक बालिशत का फ़ासिला था, एक हाथ का, (इस मौक़ा पर हुज़ूर अनवर ने अपने हाथ की बालिशत बना कर इतफ़ाल को दिखाते हुए फ़रमाया) सिर्फ इतना फ़ासिला इस तरफ़ कम था और दूसरी तरफ़ ज़्यादा था। और अल्लाह तआला ने उसे बख़श दिया और जन्नत में ले गया। तो यह अल्लाह तआला की रहमानियत है। और एक दूसरी रिवायत भी है कि एक शख़्स ने किसी को कहा कि क्या मैं बख़्शा जाऊँगा? उसने कहा नहीं, तुम बहुत गुनाहगार आदमी हो, तुम नहीं बख़्शे जा सकते। तो अल्लाह तआला ने वह जो नेक आदमी था, बड़ी नमाज़ें पढ़ने वाला था, अपने आपको बड़ा नेक समझता था, उसको कहा कि तुम कौन होते हो फ़ैसला करने वाले कि कौन जन्नत में जाएगा और कौन दोज़ख़ में जाएगा। फिर क़िस्मत से दोनों एक ही वक़्त में इकट्ठे मर गए। और फिर जब अल्लाह तआला के पास हाज़िर हुए तो अल्लाह तआला ने उस नेक आदमी को जिसने गुनाहगार आदमी को कहा था कि तुम दोज़ख़ में जाओगे और मैं जन्नत में जाने वाला हूँ, मेरी गारंटी है। अल्लाह तआला ने कहा तुम्हारी गारंटी कहाँ से आ गई? चलो तुम्हें मैं दोज़ख़ में डालता हूँ और जिसको तुम कह रहे थे कि दोज़ख़ में जाओगे और जन्नत में नहीं जाओगे उसको मैं जन्नत में डालता हूँ। तो अल्लाह तआला की रहमानियत तो यह है। इसलिए हमारा काम यह है कि हम कोशिश करें कि अल्लाह तआला को राज़ी करते रहें। अल्लाह तआला का इलम भी है लेकिन अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर भी है। अल्लाह तआला रहमान भी है, उसकी रहमानियत भी है।और अल्लाह तआला ग़फ़ूर भी है, बख़शने वाला भी है। तो आख़िर में आकर अल्लाह तआला अपने फ़ैसले को बदल के तक़दीर बदल भी सकता है। जब इस में हर क़ुदरत है तो इस को यह क़ुदरत भी है कि वह अपना फ़ैसला बदल दे। इसलिए अगर तुमने यह कह दिया कि जी अल्लाह तआला ने फ़ैसला कर लिया है कि हमने दोज़ख़ में जाना है तो चलो गुनाह करते रहो कोई बात नहीं। फ़ुलां काम करते रहो, हराम चीज़ें खाते रहो और स्वर खाते रहो और शराब पीते रहो और गुनाह करते रहो तो कुछ नहीं होगा। अब इतना कुछ कर लिया है, अल्लाह ने हमें कहाँ बख़्शना है। अल्लाह तआला कहता है नहीं, कोशिश करो, कोशिश करो मैं आख़िर में भी तुम्हें बख़श सकता हूँ। इसलिए कोशिश यह करनी चाहिए कि अल्लाह तआला शुरू में ही बख़श दे और फिर इन्सान यह दुआ मांगे कि मेरा अंजाम बख़ैर हो और मैं आख़िर तक नेकियां ही करता रहूं। इसलिए हमें कोशिश करनी चाहिए।अल्लाह तआला को इख़तेयार है नाँ? अल्लाह तआला मालिक है उस को हर चीज़ का इख़तेयार है। वह आख़िर में आके तुम्हें बख़श भी सकता है। तुमने कह देना है कि मेरी तक़दीर का फ़ैसला हो गया मैं तो गुनाहगार हूँ। अल्लाह तआला ने कहा अगर मैं सौ क़तल करने वाले

को बख़श सकता हूँ तो तुम्हें भी बख़श सकता हूं।

प्रश्न : इसी virtual मुलाक़ात दिनांक 29 नवंबर 2020 ई. में एक और तिफ़्ल ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि कौरोना वायरस के ख़त्म होने के बाद दुनिया फिर से वैसे ही नॉर्मल हो सकती है जैसे पहले थी? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : यह तो अल्लाह तआला बेहतर जानता है। नॉर्मल हो जाएगी लेकिन कौरोना वायरस के बाद दुनिया के जो आर्थिक हालात, economic हालात हो गए हैं इस का असर दुनिया पर पड़ेगा। और अगर आर्थिक लिहाज़ से कुछ न भी हो, अगर जंग न भी हो तब भी आर्थिक हालात को stable होते होते कई साल लग जाऐंगे। लेकिन उमूमन यही देखा गया है कि जब ऐसे हालात होते हैं तो मआशी हालात बिगड़ते हैं और फिर जंगों की सूरत भी पैदा होती है। और आजकल जो दुनिया की हालत है वह यह है कि जंगों के हालात पैदा हो रहे हैं। और अगर कौरोना वायरस के बाद जंग हो जाती है तो फिर और भी ख़तरनाक हालात हो जाऐंगे। और फिर उसको नॉर्मल होते होते भी कई साल लग जाऐंगे। इसलिए हमें यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला दुनिया को अक़्ल दे और जो दुनिया वाले हैं इस अर्से में दुनिया की तरफ़ झुकने और आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ मारने और ग़सब करने की बजाय अक़्ल करें, इनके लीडर अक़्ल करें और अमन और सुकून से रहने की कोशिश करें और आपस में इकट्ठे हो कर, दुनिया को एक रुख के कोशिश करें तो जल्दी दुबारा नॉर्मल हालात पैदा करलींगे। लेकिन अगर उन्होंने यह कोशिश न की तो फिर हालात नॉर्मल नहीं होंगे। फिर हालात नॉर्मल होते हुए कई साल लगेंगे और बड़ी ख़ौफ़नाक सूरत-ए-हाल पैदा होगी। वैसे मुझे लग रहा है कि कौरोना वायरस ख़त्म होने के बाद कहीं जंगों के हालात न शुरू हो जाएं। और फिर हालात नॉर्मल होते होते कई साल लग जाऐंगे। इसलिए हमें दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह न करे कि जंगों के हालात हों और जो दुनिया के लीडर हैं वह अक़्ल करें और यह कोशिश करें कि जल्दी से जल्दी नॉर्मल हालात क़ायम हो जाएं। लेकिन इसके लिए यही है कि अल्लाह की तरफ़ रुजू करना पड़ेगा। अगर अल्लाह की तरफ़ रुजू नहीं करेंगे तो फिर कोई और वबा, कोई और बला, कोई और चीज़ उन पर आएगी और फिर उनको मार पड़ेगी। तो जब तक यह लोग अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं झुकते, अल्लाह के हुक़ूक़ अदा नहीं करते और उसके बंदों के हक़ अदा नहीं करते उस वक़्त तक हालात नॉर्मल नहीं हो सकते। इसलिए हम अहमदियों को भी ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए, तब्लीग़ करनी चाहिए और लोगों को बताना चाहिए कि दुनिया के हालात नॉर्मल करने के लिए एक ही ईलाज है कि तुम अल्लाह तआला की तरफ़ झुको, अल्लाह तआला की तरफ़ वापस आ जाओ, अल्लाह तआला के हक़ अदा करने वाले बनो और उसके बंदों के हक़ अदा करने वाले बनो। ठीक है?

प्रश्न: एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस

में लिखा कि आम ज़रूरत की अशीया की फ़रोख़्त के कारोबार में अशीया की क़ीमत क़िस्तों में अदा करने वालों से आम क़ीमत से कुछ ज़्यादा लेना सूद तो नहीं? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 30 मार्च 2020 में इस प्रश्न का निमंलिखित जवाब अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : आप अपने कारोबार में चीज़ ख़रीदने वालों को अगर पहले बता दें कि नक़द की सूरत में इस चीज़ की इतनी क़ीमत होगी और अगर वह इसी चीज़ की क़ीमत क़िस्तों में अदा करेंगे तो उन्हें इतने पैसे ज़्यादा देने पड़ेंगे तो इस में कोई हर्ज नहीं और यह सूद के ज़ुमरे में नहीं आता। क्योंकि इस सूरत में आपको क़िस्तों में चीज़ें ख़रीदने वालों का बाक़ायदा हिसाब रखना पड़ेगा और हो सकता है कि उन्हें उनकी क़िस्तों की अदायगी के लिए याद देहानियां भी करवानी पड़ें, जिस पर बहरहाल आपका वक़्त खर्च होगा और दुनिया वह कामों में वक़्त की भी एक क़ीमत होती है। इसलिए मुलाज़मत पेशा लोग अपने वक़्त ही की बड़ी-बड़ी तनख़्वाहें लेते हैं।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में किसी अख़बार में शाय होने वाला एक औरत का वाक़िया कि उसने अपने ख़ावंद को उस के शराब के नशे में धुत होने की वजह से हमबिस्तरी से इंकार कर दिया, वर्णन कर के दरयाफ़त किया है कि अगर मियां बीवी में से एक फ़रीक़ नशे में हो तो क्या बाहम मुहब्बत के जज़बात क़ायम रह सकते हैं? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 30 मार्च 2020 में इस मसला के बारे में निमंलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया

उत्तर : ऐसी सूरत में प्रश्न मुहब्बत के जज़बात क़ायम रहने या ना रहने का नहीं बल्कि सलीम फ़ित्रत की बात है। इसलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में फ़िरऔन की बीवी की इस दुआ को हमारे लिए महफ़ूज़ करके हमारी राहनुमाई फ़रमाई है कि رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ अर्थात : हे ख़ुदा तू अपने पास एक घर जन्नत में मेरे लिए भी बना दे और मुझे फ़िरऔन और उस की बदआमालियों से बचा ले।

इस आयत से वाज़िह होता है कि फ़िरऔन की बीवी फ़िरऔन से अलैहदगी लेने में बहरहाल मजबूर थी जो उसने ख़ुदा के हुज़ूर यह इल्तिजा की।

अत: इस क़ुरआन की तालीम से साबित होता है कि अगर किसी मोमिना औरत के बुरे ख़ावंद के समझाने के बावजूद इस्लाह न हो रही हो और औरत को उस से अलैहदगी लेने में कोई मजबूरी दरपेश न हो तो उस मोमिना औरत को दुआ करके ऐसे बुरे ख़ावंद से अलैहदगी ले लेनी चाहिए। शेष.....

(अखबार बदर के सौजन्य से)

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ (النحل 12)

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

सालाना इज्तेमा मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की कुछ चयनित तस्वीरें

सालाना इज्तेमा मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की कुछ चयनित तस्वीरें

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

अपनी सेहत का ध्यान कैसे रखें।

1. सही भोजन का सेवन करें। 2. पर्याप्त पानी पियें।
3. ध्यान (योगा, व्यायाम) करें। 4. नियमित रूप से डॉक्टर के पास जाएं।
5. स्वस्थ वजन बनाए रखें। 6. जीवन के कुछ लक्ष्य निर्धारित करें।
7. रात में अच्छी नींद लें। 8. शराब का सेवन न करें।
9. तम्बाकू (नशा इत्यादि) से दूर रहें। 10. घर का खाना खाएं।
11. हेल्दी स्नैक का सेवन करें। 12. अपने दाँत साफ करना न भूलें।

अपने लिए कुछ वक्त निकालें और लोगों से मिलें। खुश रहें।

कई तरह के किए गए शोध से पता चलता है कि लंबे वक्त तक जीने के लिए और बीमारियों से दूर रहने की सबसे बेहतर दवा एक हेल्दी लाइफस्टाइल है। यह इतना बड़ा काम भी नहीं है, आप बस अपने आहार और व्यायाम में बदलाव करके अपने तनाव को आराम से दूर कर सकते हैं। इसे एक जिद या जुनून न बनाते हुए आप खुद की नई खोज में एक बेहतर सफर तय कर सकते हैं। आइए देखते हैं कि हमारे इस लेख में आपके लिए क्या काम की चीज है।

★ ★ ★